

## भक्ति कालीन साहित्य और सामाजिक समरसता

कोमल यादव

वी. एस. एस. डी. कॉलेज, कानपुर

### सारांश

भक्ति काल भारतीय साहित्य के इतिहास का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण युग है, जिसने सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन को गहराई से प्रभावित किया। इस काल में रचित साहित्य केवल आध्यात्मिक चेतना तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसने समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव, धार्मिक कट्टरता, ऊँच-नीच तथा सामाजिक असमानताओं के विरुद्ध सशक्त आवाज़ उठाई। संत कवियों ने अपने विचारों और रचनाओं के माध्यम से मानवता, प्रेम, समानता तथा भाईचारे का संदेश दिया। कबीर ने जाति-पाँति और धार्मिक पाखंड का विरोध करते हुए मानव धर्म को सर्वोपरि माना, वहीं रैदास ने समतामूलक समाज की कल्पना प्रस्तुत की। गुरु नानक ने धार्मिक सहिष्णुता और मानव सेवा पर बल दिया, जबकि तुलसीदास और सूरदास ने लोकमंगल तथा नैतिक मूल्यों को अपने साहित्य का आधार बनाया। भक्ति कालीन साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि इसे लोकभाषाओं में रचा गया, जिससे सामान्य जनता तक सामाजिक चेतना का प्रसार संभव हो सका। इस साहित्य ने समाज के निम्न वर्ग, दलितों तथा उपेक्षित समुदायों को नई पहचान और आत्मविश्वास प्रदान किया। भक्ति आंदोलन ने भारतीय समाज में सांस्कृतिक एकता और सामाजिक समरसता को सुदृढ़ करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्तमान समय में जब समाज अनेक प्रकार के विभाजनों और असहिष्णुता की चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब भक्ति साहित्य के मानवतावादी और समन्वयवादी विचार अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। यह अध्ययन भक्ति कालीन साहित्य के माध्यम से सामाजिक समरसता की अवधारणा तथा उसके सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

**मूल शब्द:** भक्ति काल, संत साहित्य, सामाजिक समरसता, कबीर, रैदास, गुरु नानक, तुलसीदास, मानवता, समानता, भक्ति आंदोलन

### 1. प्रस्तावना

भक्ति काल हिन्दी साहित्य का स्वर्णिम युग माना जाता है। यह काल लगभग चौदहवीं से सत्रहवीं शताब्दी तक विस्तृत है। इस समय भारतीय समाज अनेक सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक समस्याओं से जूझ रहा था। समाज में जाति-पाँति, ऊँच-नीच, छुआछूत, धार्मिक कट्टरता तथा आडम्बरों का प्रभाव अत्यधिक बढ़ गया था। सामान्य जनता शोषण और असमानता का सामना कर रही थी। ऐसे समय में भक्ति आंदोलन ने समाज को नई दिशा प्रदान की। इस आंदोलन के संत कवियों ने भक्ति को केवल ईश्वर प्राप्ति का साधन न मानकर उसे सामाजिक जागरण और मानव कल्याण का माध्यम बनाया।

भक्ति कालीन साहित्य ने भारतीय समाज में मानवता, प्रेम, समानता और भाईचारे की भावना को मजबूत किया। इस काल के कवियों ने लोकभाषाओं का प्रयोग करके अपने विचार सीधे जनता तक पहुँचाए। उन्होंने यह संदेश दिया कि सभी मनुष्य समान हैं और ईश्वर की दृष्टि में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं है। कबीर, रैदास, गुरु नानक, दादू, मीरा, सूरदास तथा तुलसीदास जैसे कवियों ने अपने साहित्य के माध्यम से सामाजिक समरसता की स्थापना का प्रयास किया। इनके विचारों में मानव धर्म को सर्वोच्च स्थान दिया गया।

भक्ति आंदोलन का मुख्य उद्देश्य समाज में व्याप्त धार्मिक आडम्बरों और सामाजिक कुरीतियों का विरोध करना था।

संत कवियों ने बाह्य आडम्बरों की अपेक्षा आंतरिक शुद्धता और सच्ची भक्ति पर बल दिया। उन्होंने हिन्दू और मुस्लिम दोनों समुदायों में फैली संकीर्णताओं की आलोचना की तथा मानव एकता का संदेश दिया। कबीर ने कहा कि ईश्वर मंदिर और मस्जिद में नहीं, बल्कि प्रत्येक मनुष्य के भीतर निवास करता है। इसी प्रकार गुरु नानक ने “एक ओंकार” के सिद्धांत के माध्यम से सम्पूर्ण मानव जाति की एकता पर बल दिया।

भक्ति कालीन साहित्य की एक महत्वपूर्ण विशेषता उसकी जनसामान्य से निकटता है। यह साहित्य दरबारी संस्कृति से अलग होकर लोकजीवन से जुड़ा हुआ था। इसमें आम जनता की पीड़ा, संघर्ष और आशाओं का चित्रण मिलता है। संत कवियों ने सामाजिक समरसता को स्थापित करने के लिए प्रेम, करुणा, सहिष्णुता तथा नैतिक मूल्यों को आवश्यक बताया। उनके विचारों ने भारतीय समाज में सामाजिक और सांस्कृतिक एकता को सुदृढ़ किया।

वर्तमान समय में भी भक्ति साहित्य की प्रासंगिकता बनी हुई है। आज जब समाज जातीय, धार्मिक और सामाजिक विभाजनों की समस्याओं का सामना कर रहा है, तब संत साहित्य के समन्वयवादी और मानवतावादी विचार समाज को नई दिशा प्रदान कर सकते हैं। भक्ति कालीन साहित्य केवल साहित्यिक धरोहर नहीं है, बल्कि सामाजिक चेतना और मानवीय मूल्यों का सशक्त स्रोत भी है।

इस शोध आलेख का उद्देश्य भक्ति कालीन साहित्य की प्रमुख विशेषताओं का अध्ययन करना तथा सामाजिक समरसता की स्थापना में संत कवियों के योगदान का विश्लेषण करना है। साथ ही यह भी स्पष्ट करना है कि आधुनिक समाज में भक्ति साहित्य के विचार किस प्रकार उपयोगी और प्रासंगिक हैं।

## 2. भक्ति कालीन साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ

भक्ति कालीन साहित्य हिन्दी साहित्य की एक ऐसी धारा है, जिसने भारतीय समाज और संस्कृति को गहराई से प्रभावित किया। इस साहित्य का मुख्य उद्देश्य केवल ईश्वर की उपासना करना नहीं था, बल्कि समाज में व्याप्त असमानताओं, कुरीतियों और धार्मिक संकीर्णताओं को दूर करके मानवता और सामाजिक समरसता की स्थापना करना भी था। भक्ति कालीन कवियों ने अपने साहित्य के माध्यम से जनसामान्य को सरल भाषा में नैतिकता, प्रेम, समानता और भक्ति का संदेश दिया। इस साहित्य की अनेक विशेषताएँ हैं, जिन्होंने इसे जनप्रिय और प्रभावशाली बनाया।

सबसे प्रमुख विशेषता भक्ति भावना की प्रधानता है। भक्ति कालीन कवियों ने ईश्वर के प्रति प्रेम और समर्पण को जीवन का सर्वोच्च मार्ग माना। उन्होंने ज्ञान और कर्म की अपेक्षा भक्ति को अधिक महत्त्व दिया। इस काल में सगुण और निर्गुण दोनों प्रकार की भक्ति धाराएँ विकसित हुईं। सगुण भक्ति में राम और कृष्ण की आराधना की गई, जबकि निर्गुण भक्ति में निराकार ईश्वर की उपासना पर बल दिया गया। संत कवियों का मानना था कि सच्ची भक्ति मनुष्य को आंतरिक शांति और नैतिक शक्ति प्रदान करती है।

भक्ति साहित्य की दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता लोकभाषाओं का प्रयोग है। इस काल के कवियों ने संस्कृत जैसी कठिन भाषा के स्थान पर अवधी, ब्रजभाषा, पंजाबी, राजस्थानी तथा साधुक्कड़ी जैसी जनभाषाओं का उपयोग किया। इससे उनका साहित्य सीधे सामान्य जनता तक पहुँचा। कबीर, तुलसीदास, सूरदास और मीरा जैसे कवियों ने लोकभाषाओं में रचनाएँ करके साहित्य को जनसामान्य के निकट ला दिया। यही कारण है कि भक्ति साहित्य का प्रभाव व्यापक और स्थायी रहा।

धार्मिक आडम्बरों और पाखंड का विरोध भी भक्ति कालीन साहित्य की प्रमुख विशेषता है। संत कवियों ने बाहरी दिखावे, कर्मकांड और रूढ़ियों की आलोचना की। उन्होंने यह बताया कि ईश्वर की प्राप्ति मंदिर, मस्जिद या

तीर्थयात्राओं से नहीं, बल्कि सच्चे मन, प्रेम और सेवा से होती है। कबीर ने अपने दोहों में हिन्दू और मुस्लिम दोनों धर्मों में फैले आडम्बरों की आलोचना की। इसी प्रकार रैदास और दादू ने भी सामाजिक और धार्मिक भेदभाव का विरोध किया।

मानवतावादी दृष्टिकोण भक्ति साहित्य का मूल आधार था। संत कवियों ने मनुष्य को उसकी जाति, धर्म या वर्ग के आधार पर नहीं, बल्कि उसके कर्म और मानवता के आधार पर महत्त्व दिया। उन्होंने समाज में समानता और भाईचारे की भावना को बढ़ावा दिया। रैदास ने ऐसे समाज की कल्पना की जहाँ सभी मनुष्य समान हों और किसी प्रकार का भेदभाव न हो। गुरु नानक ने भी मानव सेवा और समानता को धर्म का सबसे बड़ा रूप माना।

भक्ति कालीन साहित्य में सामाजिक चेतना और लोकमंगल की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इस साहित्य में समाज के निम्न वर्ग, दलितों और शोषित लोगों की पीड़ा को अभिव्यक्ति मिली। संत कवियों ने समाज को नैतिक मूल्यों, प्रेम, करुणा और सहिष्णुता का संदेश दिया। तुलसीदास ने अपने साहित्य में आदर्श समाज और नैतिक जीवन का चित्रण किया, जबकि सूरदास ने प्रेम और भक्ति के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं को व्यक्त किया।

सरलता और भावपूर्ण अभिव्यक्ति भी भक्ति साहित्य की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। इस साहित्य की भाषा सहज, मधुर और प्रभावशाली है। कवियों ने जटिल दार्शनिक विचारों को भी सरल ढंग से प्रस्तुत किया, जिससे सामान्य व्यक्ति भी उन्हें आसानी से समझ सका। उनके साहित्य में भावनात्मक गहराई और आत्मीयता का विशेष स्थान है।

### 3. संत कवियों के साहित्य में सामाजिक समरसता

भक्ति काल के संत कवियों ने अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज में सामाजिक समरसता, समानता और मानवता की भावना को विकसित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। उस समय समाज जातिगत भेदभाव, धार्मिक कट्टरता, छुआछूत और ऊँच-नीच जैसी अनेक समस्याओं से ग्रस्त था। संत कवियों ने इन सामाजिक बुराइयों का विरोध करते हुए प्रेम, भाईचारे और मानव धर्म को सर्वोच्च स्थान दिया। उनका साहित्य केवल आध्यात्मिक चेतना का माध्यम नहीं था, बल्कि सामाजिक सुधार और जनजागरण का सशक्त साधन भी था।

#### (क) कबीर और सामाजिक समरसता

कबीर भक्ति काल के निर्गुण संत कवियों में प्रमुख स्थान रखते हैं। उन्होंने समाज में फैली जाति-पाँति, धार्मिक पाखंड और आडम्बरों का तीव्र विरोध किया। कबीर का मानना था कि सभी मनुष्य एक ही ईश्वर की संतान हैं, इसलिए उनमें किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होना चाहिए। उन्होंने हिन्दू और मुस्लिम दोनों समुदायों की संकीर्णताओं की आलोचना की और मानवता को सबसे बड़ा धर्म बताया।

कबीर के दोहों में सामाजिक समानता और मानवीय एकता का स्पष्ट संदेश मिलता है। वे कहते हैं—

“जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।  
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान॥”

इस दोहे के माध्यम से कबीर ने यह स्पष्ट किया कि मनुष्य का मूल्य उसकी जाति से नहीं, बल्कि उसके ज्ञान और कर्म से निर्धारित होना चाहिए। कबीर ने मंदिर और मस्जिद के विवादों से ऊपर उठकर मनुष्य के भीतर ईश्वर की खोज करने पर बल दिया। उनके विचारों ने समाज में सामाजिक समरसता और धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा दिया।

#### (ख) रैदास और समतामूलक समाज

संत रैदास निम्न वर्ग से संबंधित होने के कारण समाज में व्याप्त भेदभाव को निकट से अनुभव करते थे। उन्होंने

अपने साहित्य में समानता और सामाजिक न्याय की भावना को व्यक्त किया। रैदास ने ऐसे समाज की कल्पना की जिसमें किसी प्रकार का जातिगत भेदभाव न हो और सभी मनुष्य समान अधिकारों के साथ जीवन व्यतीत करें।

उनकी प्रसिद्ध पंक्तियाँ—

“ऐसा चाहूँ राज मैं, जहाँ मिले सबन को अन्न।  
छोट-बड़ी सब सम बसें, रैदास रहे प्रसन्न॥”

इन पंक्तियों में रैदास ने आदर्श समाज की कल्पना प्रस्तुत की है, जहाँ सभी लोगों को समान अवसर और सम्मान प्राप्त हो। उन्होंने अस्पृश्यता और सामाजिक असमानता का विरोध करते हुए मानवता और प्रेम को सर्वोपरि माना।

#### (ग) गुरु नानक और मानव एकता

गुरु नानक ने भारतीय समाज में धार्मिक सहिष्णुता और मानव सेवा का संदेश दिया। उन्होंने “एक ओंकार” के सिद्धांत के माध्यम से यह बताया कि सम्पूर्ण संसार का ईश्वर एक है और सभी मनुष्य समान हैं। गुरु नानक ने जाति-पाँति, अंधविश्वास और धार्मिक कट्टरता का विरोध किया।

उन्होंने लोगों को सत्य, ईमानदारी, सेवा और प्रेम का मार्ग अपनाने की प्रेरणा दी। उनके द्वारा स्थापित ‘लंगर’ परंपरा सामाजिक समरसता का उत्कृष्ट उदाहरण है, जहाँ सभी लोग बिना किसी भेदभाव के एक साथ बैठकर भोजन करते हैं। गुरु नानक के विचारों ने भारतीय समाज में भाईचारे और समानता की भावना को सुदृढ़ किया।

#### (घ) तुलसीदास और लोकमंगल की भावना

तुलसीदास सगुण भक्ति धारा के प्रमुख कवि थे। उन्होंने *रामचरितमानस* के माध्यम से आदर्श समाज, नैतिक मूल्यों और लोकमंगल की भावना को प्रस्तुत किया। तुलसीदास ने राम को मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में चित्रित किया, जो न्याय, करुणा और धर्म का पालन करते हैं।

उनके साहित्य में समाज को नैतिक और आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। तुलसीदास ने प्रेम, दया, सहिष्णुता और परोपकार जैसे मूल्यों को सामाजिक जीवन का आधार माना। उनके विचारों ने भारतीय समाज में सांस्कृतिक एकता और नैतिक चेतना को मजबूत किया।

#### (ङ) सूरदास और मानवीय संवेदनाएँ

सूरदास ने कृष्ण भक्ति के माध्यम से प्रेम, वात्सल्य और मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्ति दी। उनके साहित्य में मानव जीवन की भावनात्मक गहराई और आत्मीयता दिखाई देती है। सूरदास ने भक्ति को प्रेम और करुणा से जोड़ते हुए समाज में सौहार्द और सहानुभूति की भावना को विकसित किया।

उनकी रचनाओं में लोकजीवन की सहजता और मानवीय संबंधों की मधुरता का चित्रण मिलता है। इससे समाज में प्रेम और सामाजिक एकता की भावना को बल मिला।

#### 4. भक्ति आंदोलन और सामाजिक परिवर्तन

भक्ति आंदोलन भारतीय समाज में केवल धार्मिक जागरण का माध्यम नहीं था, बल्कि यह एक व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का आंदोलन भी था। मध्यकालीन भारत में जब समाज जातिगत भेदभाव, धार्मिक कट्टरता, सामाजिक असमानता और रूढ़ियों से ग्रस्त था, तब भक्ति आंदोलन ने समाज को नई दिशा प्रदान की। संत कवियों ने अपने विचारों और साहित्य के माध्यम से मानवता, समानता और भाईचारे का संदेश देकर सामाजिक परिवर्तन की

प्रक्रिया को गति दी। इस आंदोलन का प्रभाव समाज के विभिन्न वर्गों पर पड़ा और इससे भारतीय सामाजिक संरचना में महत्वपूर्ण बदलाव देखने को मिले।

भक्ति आंदोलन का सबसे बड़ा योगदान सामाजिक कुरीतियों और आडम्बरों के विरोध के रूप में दिखाई देता है। उस समय धर्म के नाम पर अनेक प्रकार के कर्मकांड और पाखंड प्रचलित थे। समाज में ब्राह्मणवाद और जाति व्यवस्था के कारण निम्न वर्ग के लोगों को अनेक प्रकार के अधिकारों से वंचित रखा जाता था। संत कवियों ने इन व्यवस्थाओं का विरोध करते हुए यह बताया कि ईश्वर की दृष्टि में सभी मनुष्य समान हैं। कबीर, रैदास और दादू जैसे संतों ने स्पष्ट शब्दों में जातिगत भेदभाव और धार्मिक आडम्बरों की आलोचना की। इससे समाज में नई चेतना का विकास हुआ।

भक्ति आंदोलन ने दलित और निम्न वर्ग के लोगों में आत्मसम्मान और जागरूकता की भावना उत्पन्न की। उस समय समाज में निम्न जातियों को सामाजिक और धार्मिक अधिकार प्राप्त नहीं थे। संत रैदास स्वयं निम्न वर्ग से संबंधित थे, इसलिए उन्होंने अपने साहित्य में सामाजिक समानता और न्याय की बात कही। उन्होंने ऐसे समाज की कल्पना की जहाँ किसी प्रकार का ऊँच-नीच का भेद न हो। इसी प्रकार कबीर ने भी यह संदेश दिया कि मनुष्य की पहचान उसकी जाति नहीं, बल्कि उसके कर्म और चरित्र से होती है। इन विचारों ने शोषित वर्गों में आत्मविश्वास और सामाजिक चेतना को बढ़ावा दिया।

भक्ति आंदोलन का प्रभाव स्त्रियों की स्थिति पर भी पड़ा। मध्यकालीन समाज में स्त्रियों की स्थिति अत्यंत सीमित और उपेक्षित थी। उन्हें शिक्षा और सामाजिक स्वतंत्रता से वंचित रखा जाता था। भक्ति आंदोलन ने स्त्रियों को धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में नई पहचान दी। मीरा बाई इसका प्रमुख उदाहरण हैं। उन्होंने सामाजिक बंधनों और रूढ़ियों का विरोध करते हुए स्वतंत्र रूप से भक्ति का मार्ग अपनाया। उनके साहित्य में आत्मविश्वास, स्वतंत्रता और ईश्वर के प्रति समर्पण की भावना दिखाई देती है। इससे महिलाओं के प्रति समाज की सोच में परिवर्तन आया।

साम्प्रदायिक सद्भाव और धार्मिक सहिष्णुता की स्थापना में भी भक्ति आंदोलन की महत्वपूर्ण भूमिका रही। उस समय हिन्दू और मुस्लिम समुदायों के बीच अनेक प्रकार के मतभेद और संघर्ष मौजूद थे। संत कवियों ने दोनों धर्मों की संकीर्णताओं का विरोध करते हुए मानव धर्म को सर्वोच्च माना। कबीर ने हिन्दू और मुस्लिम दोनों को समान रूप से उपदेश दिया कि ईश्वर एक है और सभी मनुष्य उसकी संतान हैं। गुरु नानक ने भी “एक ओंकार” के सिद्धांत के माध्यम से धार्मिक एकता और मानव सेवा का संदेश दिया। इन विचारों ने समाज में साम्प्रदायिक सद्भाव को मजबूत किया।

भक्ति आंदोलन ने भारतीय संस्कृति और भाषा के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। संत कवियों ने लोकभाषाओं में साहित्य रचना करके सामान्य जनता को ज्ञान और चेतना से जोड़ा। इससे हिन्दी, पंजाबी, ब्रजभाषा, अवधी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का विकास हुआ। भक्ति साहित्य ने भारतीय समाज में सांस्कृतिक एकता और राष्ट्रीय चेतना को भी मजबूत किया।

इसके अतिरिक्त भक्ति आंदोलन ने नैतिक मूल्यों और मानवीय गुणों को बढ़ावा दिया। संत कवियों ने प्रेम, दया, करुणा, सेवा और सहिष्णुता जैसे मूल्यों को जीवन का आधार बताया। उन्होंने यह सिखाया कि सच्चा धर्म मानव सेवा और सदाचार में निहित है। इन विचारों ने समाज में नैतिक जागरूकता और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को विकसित किया।

## 5. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भक्ति साहित्य की प्रासंगिकता

भक्ति कालीन साहित्य केवल मध्यकालीन भारतीय समाज तक सीमित नहीं है, बल्कि उसकी प्रासंगिकता आज के आधुनिक युग में भी बनी हुई है। वर्तमान समय में समाज अनेक प्रकार की सामाजिक, धार्मिक, जातीय और सांस्कृतिक समस्याओं का सामना कर रहा है। बढ़ती असहिष्णुता, जातिगत भेदभाव, साम्प्रदायिक तनाव, नैतिक मूल्यों का पतन तथा मानव संबंधों में बढ़ती दूरियाँ समाज के लिए गंभीर चुनौती बनती जा रही हैं। ऐसे समय में भक्ति साहित्य के मानवतावादी, समन्वयवादी और नैतिक विचार समाज को नई दिशा प्रदान कर सकते हैं।

आज भी समाज में जाति और धर्म के आधार पर भेदभाव देखने को मिलता है। अनेक स्थानों पर सामाजिक असमानता और छुआछूत जैसी समस्याएँ पूरी तरह समाप्त नहीं हो पाई हैं। भक्ति कालीन संत कवियों ने सदियों पहले ही इन बुराइयों का विरोध किया था। कबीर, रैदास और गुरु नानक जैसे संतों ने यह स्पष्ट किया कि सभी मनुष्य समान हैं और मानवता ही सबसे बड़ा धर्म है। उनके विचार आज के समाज के लिए अत्यंत प्रेरणादायक हैं, क्योंकि वे सामाजिक समानता और भाईचारे की भावना को मजबूत करते हैं।

वर्तमान समय में धार्मिक कट्टरता और साम्प्रदायिक तनाव भी एक बड़ी समस्या बन चुके हैं। विभिन्न धर्मों और समुदायों के बीच बढ़ती दूरियाँ सामाजिक शांति और राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा उत्पन्न करती हैं। भक्ति साहित्य धार्मिक सहिष्णुता और समन्वय का संदेश देता है। कबीर ने हिन्दू और मुस्लिम दोनों धर्मों की संकीर्णताओं का विरोध करते हुए मानव धर्म को सर्वोच्च माना। गुरु नानक ने भी सम्पूर्ण मानव जाति को एक मानने का संदेश दिया। इन विचारों के माध्यम से समाज में पारस्परिक सम्मान और सौहार्द की भावना विकसित की जा सकती है।

भक्ति साहित्य की एक अन्य महत्वपूर्ण प्रासंगिकता नैतिक मूल्यों की स्थापना में दिखाई देती है। आधुनिक जीवन में भौतिकवाद और प्रतिस्पर्धा के कारण नैतिकता, करुणा और संवेदनशीलता का हास होता जा रहा है। लोग आत्मकेंद्रित होते जा रहे हैं और मानवीय संबंधों में विश्वास तथा आत्मीयता कम होती दिखाई देती है। भक्ति साहित्य प्रेम, दया, सहानुभूति, सेवा और त्याग जैसे मानवीय मूल्यों को जीवन का आधार मानता है। तुलसीदास, सुरदास और मीरा के साहित्य में प्रेम और नैतिकता का जो स्वर मिलता है, वह आज भी समाज को मानवीय दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा देता है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी भक्ति साहित्य अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में नैतिक शिक्षा और मानवीय मूल्यों की आवश्यकता लगातार महसूस की जा रही है। संत साहित्य विद्यार्थियों में सामाजिक चेतना, सहिष्णुता, समानता और नैतिकता के गुण विकसित करने में सहायक हो सकता है। यदि शिक्षा में भक्ति साहित्य के विचारों को उचित स्थान दिया जाए, तो युवा पीढ़ी में सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवता की भावना को मजबूत किया जा सकता है।

भक्ति साहित्य की प्रासंगिकता राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक समन्वय के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण है। भारत विविधताओं वाला देश है, जहाँ अनेक भाषाएँ, धर्म और संस्कृतियाँ विद्यमान हैं। ऐसी स्थिति में सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक एकता बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। भक्ति आंदोलन ने भारतीय संस्कृति को एकता के सूत्र में बाँधने का कार्य किया था। संत कवियों ने लोकभाषाओं में साहित्य रचकर विभिन्न वर्गों के लोगों को एक-दूसरे के निकट लाने का प्रयास किया। आज भी उनके विचार राष्ट्रीय एकता और सामाजिक सद्भाव को सुदृढ़ करने में सहायक हो सकते हैं।

इसके अतिरिक्त भक्ति साहित्य आधुनिक जीवन की मानसिक अशांति और तनाव को दूर करने में भी सहायक है। आज का मनुष्य भौतिक सुख-सुविधाओं के बावजूद मानसिक तनाव, अकेलेपन और असंतोष का अनुभव कर रहा

है। भक्ति साहित्य आंतरिक शांति, आत्मिक संतुलन और आध्यात्मिक संतोष का मार्ग प्रस्तुत करता है। संत कवियों ने प्रेम और भक्ति के माध्यम से जीवन को सरल, शांत और संतुलित बनाने की प्रेरणा दी।

## 6. निष्कर्ष

भक्ति कालीन साहित्य भारतीय साहित्य और समाज की अमूल्य धरोहर है। इस साहित्य ने केवल धार्मिक चेतना को ही विकसित नहीं किया, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक जीवन को भी नई दिशा प्रदान की। मध्यकालीन भारतीय समाज में जब जातिगत भेदभाव, धार्मिक कट्टरता, सामाजिक असमानता और आडम्बरों का प्रभाव अत्यधिक बढ़ गया था, तब संत कवियों ने अपने साहित्य के माध्यम से मानवता, समानता, प्रेम और भाईचारे का संदेश दिया। उनके विचारों ने समाज में सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक एकता की भावना को सुदृढ़ किया।

भक्ति काल के संत कवियों ने यह स्पष्ट किया कि मनुष्य की श्रेष्ठता उसकी जाति, धर्म या सामाजिक स्थिति से नहीं, बल्कि उसके कर्म, नैतिकता और मानवता से निर्धारित होती है। कबीर ने जाति-पाँति और धार्मिक पाखंड का विरोध करते हुए मानव धर्म को सर्वोपरि माना। रैदास ने समतामूलक समाज की कल्पना प्रस्तुत की, जहाँ सभी मनुष्यों को समान अधिकार और सम्मान प्राप्त हो। गुरु नानक ने धार्मिक सहिष्णुता और मानव सेवा को जीवन का आधार बताया। तुलसीदास और सूरदास ने अपने साहित्य में लोकमंगल, प्रेम, करुणा और नैतिक मूल्यों को विशेष महत्त्व दिया। इन सभी संत कवियों के विचारों ने समाज में सामाजिक चेतना और नैतिक जागरूकता का विकास किया।

भक्ति आंदोलन का प्रभाव भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों पर पड़ा। इस आंदोलन ने दलितों, शोषितों और निम्न वर्ग के लोगों में आत्मसम्मान और आत्मविश्वास की भावना उत्पन्न की। महिलाओं को भी सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में नई पहचान मिली। इसके साथ ही भक्ति साहित्य ने लोकभाषाओं के विकास और भारतीय सांस्कृतिक एकता को मजबूत करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

वर्तमान समय में भी भक्ति साहित्य की प्रासंगिकता बनी हुई है। आज समाज जातीय संघर्ष, धार्मिक असहिष्णुता, नैतिक पतन और सामाजिक विभाजन जैसी अनेक समस्याओं का सामना कर रहा है। ऐसे समय में संत साहित्य के समन्वयवादी और मानवतावादी विचार समाज को नई दिशा प्रदान कर सकते हैं। भक्ति साहित्य हमें प्रेम, सहिष्णुता, सेवा, करुणा और सामाजिक समानता का संदेश देता है, जो आधुनिक समाज की आवश्यकता है।

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भक्ति कालीन साहित्य केवल भक्ति और अध्यात्म तक सीमित नहीं है, बल्कि वह सामाजिक परिवर्तन और मानव कल्याण का सशक्त माध्यम भी है। संत कवियों के विचार आज भी समाज में सामाजिक समरसता, नैतिकता और राष्ट्रीय एकता की स्थापना के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। अतः भक्ति साहित्य का अध्ययन और उसके मूल्यों का अनुसरण वर्तमान समाज के लिए अत्यंत आवश्यक है।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

1. द्विवेदी, हज़ारीप्रसाद. (2019). *हिन्दी साहित्य की भूमिका*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
2. शुक्ल, रामचन्द्र. (2018). *हिन्दी साहित्य का इतिहास*. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा।
3. चतुर्वेदी, परशुराम. (2017). *संत साहित्य की रूपरेखा*. इलाहाबाद: किताब महल।
4. सिंह, नामवर. (2020). *कबीर और उनका युग*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
5. वर्मा, रामकुमार. (2016). *भक्ति कालीन साहित्य की विशेषताएँ*. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन।



6. मिश्र, विद्यानिवास. (2015). *भारतीय चिंतन और संत परंपरा*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
7. पाण्डेय, मैनेजर. (2019). *भक्ति आंदोलन और भारतीय समाज*. नई दिल्ली: आधार प्रकाशन।
8. त्रिपाठी, राममूर्ति. (2014). *मध्यकालीन हिन्दी साहित्य और संस्कृति*. दिल्ली: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
9. सिंह, बच्चन. (2018). *हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास*. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन।
10. गुप्त, गणपतिचन्द्र. (2013). *हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास*. जयपुर: लोकभारती प्रकाशन।